शेख़ फ़रीद - सबद ४१

फरीदा ए विसु गंदला धरीआं खंडु लिवाड़ि ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७९

फरीदा ए विसु गंदला धरीआं खंडु लिवाड़ि ॥
इकि राहेदे रहि गए इकि राधी गए उजाड़ि ॥३७॥

सार: विवेक का महत्व इस बात पर ज़ोर देता है कि जो दिखने में मधुर है वह हमेशा पोषक नहीं होता इसी प्रकार, हर आकर्षक रास्ता सच्ची जागृति की ओर नहीं ले जाता। बाहरी आकर्षण और अहंकार से प्रेरित इच्छाएँ आकर्षक लग सकती हैं लेकिन वह अक्सर भीतर छिपे विष को छिपा लेती हैं। विचार, विश्वास या कर्म जो हमारी इंद्रियों को मधुर लगते हैं यदि वह संतुष्टि प्रदान नहीं करते हैं तो हमें कड़वाहट का एहसास करा सकते हैं। अगर हम सतर्क नहीं हैं तो सांसारिक सुखों के ये भ्रामक प्रलोभन हमें भटका सकते हैं और उनकी खोज हमारी आध्यात्मिक यात्रा को ठहरा सकती है। इस यात्रा को प्रभावी ढंग से करने के लिए हमें ईमानदारी, सतर्कता और विनम्रता की आवश्यकता होती है।

फरीदा ए विसु गंदला धरीआं खंडु लिवाड़ि ॥
फ़रीद कहते हैं कि एक ज़हरीले पौधे की मीठी डंडी घातक हो सकती है। यह सांसारिक आकर्षणों की छलपूर्ण प्रकृति और उनके विनाशकारी परिणामों का प्रतीक है।

इकि राहेदे रहि गए इकि राधी गए उजाड़ि ॥३७॥
कुछ लोग इन्हें बोते-बोते ही नष्ट हो जाते हैं और कुछ उन्हें काटते हुए बर्बाद हो जाते हैं। यह दर्शाता है कि कुछ लोग भौतिकवादी संतुष्टि में लीन होकर आत्म-साक्षात्कार अनदेखा करते हैं। कुछ लोग बहुत कुछ प्राप्त करने के बावजूद लालच के लिए अपनी ईमानदारी नष्ट कर देते हैं। (३७)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद एक विषैली, मीठी डंडी का रूपक देकर बताते हैं कि सांसारिक आकर्षण कितना छलपूर्ण और आध्यात्मिक रूप से विनाशकारी हो सकता है। वह चेतावनी देते हैं कि इस तरह के मोहक दिखावे हमें गहराई से नुकसान पहुँचा सकते हैं जैसे किसी मीठी सतह के नीचे छिपे विषैले पदार्थ। फिर वह चेतावनी देते हैं कि सतही लाभों की तलाश में हम अपनी आंतरिक दिशा खो सकते हैं या बहुत कुछ प्राप्त करने के बाद भी लालच के लिए अपनी ईमानदारी से समझौता कर सकते हैं। उनका रूपक हमें यह प्रश्न करने के लिए प्रेरित करता है, क्या हम खोखले लाभों और प्रलोभनों के लिए पूर्णता से समझौता कर रहे हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com